अम्बेडकर दर्शन के
विविध आयाम

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

अम्बेडकर दर्शन के विविध आयाम

डॉ. जनक सिंह मीना

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

नमूना • SAMPLE

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

अम्बेडकर दर्शन के विविध आयाम

संस्करण : 2020
© सम्पादक
ISBN: 978-93-88998-99-4

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

नमूना SAMPLE

विषय सूची

	प्राक्कथन	*vii*
	सहायक सूची	*xi*
1.	डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता *–डॉ. जनक सिंह मीना*	1
2.	एक प्रखर समाज–वैज्ञानिक महानायक *–डॉ. रमेश चंद मीणा, बूंदी राज*	6
3.	द ग्रेट अम्बेडकर *–डॉ. बाबूलाल चांवरिया*	25
4.	संविधान का निर्माण एवं डॉ. भीमराव अम्बेडकर *–डॉ. धूलचन्द मीना*	81
5.	डॉ. अम्बेडकर का साहित्य में योगदान *–चन्दनमल नवल*	89
6.	अम्बेडकर के विचारों में लोकतंत्र की संकल्पना *–डॉ. धर्मवीर चन्देल*	96
7.	डॉ. भीमराव अम्बेडकर का प्रजातांत्रिक दृष्टिकोण *–डॉ. बी. आर. बैरवा*	117

नमूना SAMPLE

8. डॉ. भीमराव अम्बेडकर : सामाजिक न्याय का आर्थिक पक्ष 132
–प्रो. डॉ. राज किशोर प्रसाद

9. प्रेरणादायक है डॉ0 अंबेडकर का व्यक्तित्व 142
–राम शिव मूर्ति यादव

10. डॉ० भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक दर्शन का परिदृश्य 150
–डॉ. गीता कुमारी

11. डॉ. अम्बेडकर के प्रजातांत्रिक विचार 153
–सुरेश कुमार निराला

12. बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी : डॉ. अम्बेडकर 157
–राजनलाल जावा 'निर्मोही'

13. भीमराव रामजी अम्बेडकर : भारतीय महिला क्रांति के मसीहा 167
–डॉ. मनु सिंह

14. बाबा साहेब अम्बेडकर की संघर्ष यात्रा एवं संदेश 175
–डॉ. दमयंती मीना

15. डॉ. अम्बेडकर और पूना पैक्ट 181
–डॉ. खेवराराम

16. एक नाम हजार आयाम : युगदृष्टा डॉ. भीमराव अम्बेडकर 188
–हेमन्त शर्मा

17. डॉ. अम्बेडकर का महिला अधिकारों के लिए संघर्ष 200
–डॉ. महेश चन्द गोठवाल

नमूना SAMPLE

प्राक्कथन

भारत रत्न से सम्मानित बाबा साहेब डॉ. भीमराम अम्बेडकर बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। वे एक महान् शिक्षाविद्, समाज वैज्ञानिक, दार्शनिक, विधि के ज्ञाता, संविधानविद्, समाज सुधारक, पत्रकार, राष्ट्रभक्त, अर्थशास्त्री थे। डॉ. अम्बेडकर ने अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, विधि, समाजशास्त्र, इतिहास के साथ चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत कला, पाक कला, पाली भाषा में भी दक्षता प्राप्त की थी। वे अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, मराठी, हिन्दी, पाली और फारसी भाषाओं में पारंगत थे। डॉ. अम्बेडकर को अनेक नामों से जाना जाता है और उन्हें अनेक उपाधियाँ दी जाती हैं परन्तु उनका जीवन, व्यक्तित्व, कृतित्व एवं विचार दर्शन अत्यंत व्यापक एवं विस्तृत मानवतावादी रहा है। अनेक लेखकों, विचारकों एवं व्यक्तियों ने उनके चिंतन दर्शन को सीमाओं में बांधने का अनायास एवं अनर्थक प्रयास किया है। सही मायनों में उनकी पहचान महापुरुष एवं राष्ट्र निर्माता के रूप में होनी चाहिए। उन्हें सीमाओं में बांध कर उनके व्यक्तित्व एवं विचारों को कमतर आंकने का जो प्रयास होता रहा है, वह निंदनीय है और उनके कद को कम करने की साजिश है। कई बार ये देखा जाता रहा है कि लोग डॉ. अम्बेडकर को 'दलितों का मसीहा' तक सीमित कर देते हैं परन्तु यह उनके साथ अन्याय होगा। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि डॉ. अम्बेडकर ने वंचित, दलित, आदिवासियों, महिलाओं, पिछड़ों एवं अल्पसंख्यकों को आगे लाने, भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों को खत्म करने एवं समाज सुधार के कार्य अवश्य किये परन्तु उनका दृष्टिकोण मानवतावादी रहा। वे दूरदृष्टा थे और इसी के

NOT FOR SAMPLE

मद्दे नजर रखते हुए उन्होंने भारतीय संविधान में कुछ विशेष प्रावधान किए जो भेदभाव रहित, समानता स्थापित करने की दिशा में कारगर साबित हो रहे हैं।

डॉ. अम्बेडकर हिन्दू धर्म में पैदा हुए और उन पर आरोप लगते रहे हैं कि वे हिन्दू विरोधी थे अथवा ब्राह्मण विरोधी थे परन्तु यह बिल्कुल गलत है। उन्होंने सभी धर्मों का आदर किया और वे वैज्ञानिक सोच के साथ समाज एवं राष्ट्र की उन्नति की बात करते थे। उन्होंने हिन्दू धर्म में व्याप्त बुराइयों की ओर ईशारा किया और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से उन कुरीतियों/कुप्रथाओं को समूल नष्ट करने की बात कही। वे हिन्दू धर्म में उल्लेखित सही बातों एवं विचारों को स्वीकारते थे परन्तु अतार्किक, भ्रामक, पाखण्डी, अवैज्ञानिकता को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने पूरी मानवता के कल्याण एवं उन्नति की बात कही और समानता पर बल दिया।

एक बात स्पष्ट है कि भारत में डॉ. अम्बेडकर को अब तक वह स्थान प्राप्त नहीं हो सका है जिसके वास्तव में वे हकदार हैं। यदि डॉ. अम्बेडकर अनुसूचित जाति में पैदा न होकर ब्राह्मण, वैश्य या अन्य में पैदा हुए होते और उनका इतना बड़ा योगदान होता तो वे ही भगवान श्रीराम के अवतार मान लिए जाते। परन्तु मैं इसके पक्ष में भी नहीं हूँ कि उन्हें भगवान का अवतार माना जाए क्योंकि वे तो स्वयं ही समाज सुधारक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समर्थक रहे। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं तो उनका कद बहुत बड़ा है और उनका मान–सम्मान उच्च कोटि का है।

डॉ. अम्बेडकर ने नैतिक शिक्षा पर अत्यंत बल दिया और उनका मानना था कि शिक्षा का काम लोगों को नैतिकता सिखाना है जिससे वे समाज में रहने लायक बन सकें। शिक्षा का उद्देश्य व कार्य ऐसे होने चाहिए जिनसे पता चले कि वहाँ दी जाने वाली शिक्षा युवाओं के लिए उपयुक्त है, जिससे उनके अन्दर वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित हो सके और चरित्र से निष्काम व पक्षपात रहित बन सकें। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए डॉ. अम्बेडकर कहते थे कि "छात्र–छात्राओं को अपने

विद्यार्थी जीवन के दौरान केवल शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए और राजनीति से दूर रहना चाहिए। राजनीति तो पढ़ाई के बाद भी की जा सकती है लेकिन पढ़ाई का मौका बार–बार नहीं मिलता है''। अतः स्पष्ट है कि वे युवाओं को सदाचरण, सच्चरित्र, तर्कशील और वैज्ञानिक सोच से परिपूर्ण बनाकर राष्ट्र को सुदृढ़ करना चाहते थे।

डॉ. अम्बेडकर महिला अधिकारों की वकालत करते हुए लैंगिक समानता की बात करते हैं। डॉ. अम्बेडकर पर इसलिए ब्राह्मण विरोधी होने के आक्षेप लगाए जाते हैं क्योंकि उन्होंने मनुस्मृति में महिलाओं के विरूद्ध एवं मानवाधिकारों के विरूद्ध तथ्यों, तर्को एवं विचारों का खुले आम विरोध किया। मनुस्मृति ने स्त्रियों से बराबरी का अधिकार छीना और उसमें ऐसे कानून की व्यवस्था की गई जिससे महिलाएँ अपने जीवन के किसी भी क्षेत्र में पुरुषों की बराबरी न करें। मनुस्मृति के श्लोक 5.147 में प्रावधान है– 'लड़की को, नवयुवती को या वृद्धा को भी अपने घर में भी कोई काम स्वतंत्रतापूर्वक नहीं करना चाहिए।' इसी प्रकार श्लोक 5.148 में – 'स्त्री को बचपन में अपने पिता, युवावस्था में अपने पति और जब उसका पति दिवंगत हो जाए तब अपने पुत्रों के अधीन रहना चाहिए। स्त्री को कभी भी स्वतंत्र नहीं रहना चाहिए।' श्लोक 9.46 में तो यहाँ तक कहा गया कि– 'बेचने और त्याग देने पर भी कोई स्त्री अपने पति से मुक्त नहीं होती। पति का अधिकार उस पर सदैव रहेगा।' इन सब से स्पष्ट है कि मनुस्मृति महिलाओं को न तो समानता के अवसर प्रदान करती है और न ही समानता का दर्जा देती है बल्कि उन्हें सदैव अधीन बनाये रखना चाहती है। इन्हीं का विरोध डॉ. अम्बेडकर ने किया अतः वे नारी अधिकारों के समर्थक रहे और उनके उत्थान के लिए कार्य किए।

प्रस्तुत पुस्तक **अम्बेडकर दर्शन के विविध आयाम** में लेखकों ने अपने लेखों के माध्यम से डॉ. भीमराम अम्बेडकर के जीवन दर्शन, व्यक्तित्व, कृतित्व एवं विचारों को प्रस्तुत करने का एक अच्छा प्रयास किया है जिनमें हैं– डॉ. रमेश चंद मीणा, डॉ. बाबूलाल चांवरिया, प्रो. राजकिशोर प्रसाद, श्री शिवमूर्ति यादव, डॉ. महेश चन्द गोठवाल, डॉ. धर्मवीर चंदेल, डॉ. धूलचंद मीना, डॉ. बबली राम बैरवा, गीता कुमारी,

SAMPLE

सुरेश कुमार निराला, श्री राजनलाल जावा, स्व. श्री चन्दनमल नवल, डॉ. मनु सिंह, डॉ. दमयंती मीना, डॉ. खेवराराम एवं हेमन्त शर्मा। इस पुस्तक को इस रूप में लाने में इन सभी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस पुस्तक को इस रूप में लाने में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष योगदान देने वाले मेरे गुरुजनों, साथियों, मित्रों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं पारिवारिक सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। इस पुस्तक के संशोधन, परिमार्जन, वर्तनी शुद्धि में डॉ. धूलचन्द मीना का अद्वितीय योगदान रहा है। मैं इन्हें धन्यवाद देता हूँ।

श्री विरेन्द्र कुमार यादव निदेशक अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली का भी आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने पुस्तक को आकर्षक स्वरूप प्रदान किया।

डॉ. जनक सिंह मीना

नहीं • SAMPLE

सहायक सूची

1. **डॉ. जनक सिंह मीना,** सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)।
2. **डॉ. रमेश चंद मीणा,** एसोसियट प्रोफेसर, बूंदी (राज.)।
3. **डॉ. धूलचन्द मीना,** सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, जी. डी. मेमोरियल ग्रुप ऑफ कॉलेज, जोधपुर।
4. **चन्दनमल नवल,** अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (से.नि.)।
5. **डॉ. धर्मवीर चन्देल,** परियोजना निदेशक, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
6. **डॉ. बबली राम बैरवा,** 91290, कुडी भगतासनी, हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर।
7. **प्रो. (डॉ.) राज किशोर प्रसाद,** विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग एम. एस. कॉलेज, अलौली, सोनहार खगड़िया; बिहार।
8. **राम शिव मूर्ति यादव,** एम0 ए0 (समाज शास्त्र), काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ0प्र0), स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी (सेवानिवृत्त), तहबरपुर, पोस्ट– टीकापुर, आजमगढ़ (उ0प्र0)–276208।
9. **डॉ. गीता कुमारी,** असिस्टेंट प्रोफेसर, के०वी० रंगा रेड्डी डिग्री कॉलेज फॉर विमेन, हैदराबाद।
10. **सुरेश कुमार निराला,** (हिंदी विभाग) अग्रेंजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद–500007।

SAMPLE

11. **डॉ. मनु सिंह,** अतिथि शिक्षक, राजनीतिक विज्ञान विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)।

12. **डॉ. दमयंती** मीना, राजनीति विज्ञान विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर।

13. **डॉ. खेवराराम,** सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, दक्ष महाविद्यालय, चौहटन, बाड़मेर।

14. **हेमन्त शर्मा,** शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)।

15. **डॉ. बाबूलाल चांवरिया,** जोधपुर।

16. **राजनलाल जावा 'निर्मोही',** 394, लाभु सदन, लखारों को बास, किले के नीचे, जोधपुर – 342002 (राज.)।

17. **डॉ. महेश चंद गोठवाल,** सहायक आचार्य, लोक प्रशासन, बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर।

नमूना • SAMPLE

1

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों की प्रासंगिकता

डॉ. जनक सिंह मीना

डॉ. भीमराव अम्बेडकर 14 अप्रैल, 1891 को इंदौर के पास महू में एक दलित परिवार में जन्मे, पले और बड़े हुए। ये उनके माता–पिता की 14वीं एवं अन्तिम संतान के रूप में जन्में और उनका परिवार मराठी था जो अम्बावाड़े नगर से सम्बन्ध था, वर्तमान में वह महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में है। अपने नाम के पीछे अपने एक शिक्षक के कहने पर अम्बेडकर जोड़ा गया जो कि उनके पूर्वजों की जन्मस्थली का प्रतीक है। डॉ. अम्बेडकर ने गहन अध्ययन किया तथा बहुप्रतिभा के धनी विद्यार्थी के रूप में अनेक विषयों का ज्ञान प्राप्त कर एम.ए. अर्थशास्त्र, पीएच.डी., एम. एससी, डी. एससी; बार एट लॉ, एलएलडी आदि की उपाधियाँ प्राप्त की। डॉ. अम्बेडकर विदेश में जाकर अर्थशास्त्र में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त करने वाले पहले भारतीय थे। डॉ. अम्बेडकर ने अनेक पुस्तकों की रचना की तथा उनके शोध पत्र विभिन्न राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए।

व्यक्ति अपने युग और समाज की देन होता है और उसकी सीमाओं में रहकर जीना उसकी नियति होता है। डॉ. अम्बेडकर ने युग व समाज

SAMPLE

की स्थापित व्यवस्था एवं वैचारिकी की न तो अधीनता स्वीकार की और न ही उनसे समझौता किया अपितु अपने ज्ञान और विचारधारा के आधार पर नये सिद्धान्त स्थापित करने की दिशा में कार्य किया। अक्सर यह देखा, सुना, पढ़ा जाता है कि अम्बेडकर को विचारों की संकीर्णता के दायरे में समेटते हुए उसे एक परिधि में बांधने के प्रयास किये जाते रहे, परन्तु उनका दृष्टिकोण वैश्विक था, व्यापक था, मानवतावादी था, अतः उन्हें विचारों की सीमाओं में बांधना अन्याय होगा। कई बार डॉ. अम्बेडकर को 'दलितों का मसीहा' कहकर उनका अपमान करते हैं, क्योंकि वे एक दार्शनिक चिंतक, भारतीय संविधान के जनक, राष्ट्रपुरुष, लेखक, राजनीतिज्ञ, समाजसुधारक, कानून विशेषज्ञ, शिक्षाशास्त्री, राष्ट्रनिर्माता, विश्वबन्धुत्व एवं मानवतावादी चिंतन के प्रहरी थे। उन्होंने समाज और देश में न्याय, स्वंतत्रता, समानता और भ्रातृत्व लाने की पहल की।

डॉ. अम्बेडकर ने अपने जीवन में तीन गुरु माने जिसमें संत कबीर, महात्मा ज्योतिबा फुले और महात्मा गौतम बुद्ध और यहीं से उन्होंने अपने द्वारा दिया गया मूलमंत्र 'शिक्षित बनो, संगठित रहो, और संघर्ष करो' दिया। डॉ. अम्बेडकर का दर्शन समाज को स्वाधीनता, समानता और भ्रातृत्व पर आधारित समाज रचना के लिए प्रेरित करता है। वे एक ऐसे समाज के स्वप्नदृष्टा थे जिसमें मनुष्य अपने विवेक से अधंविश्वासों का खंडन करता है। समाज और राष्ट्र के प्रति वैज्ञानिक एवं विवेक सम्मत दृष्टिकोण अपनाता है और धर्मशास्त्रों में क्या लिखा, इसकी चिन्ता न करके मानवीय नैतिकता एवं न्याय के आदर्शों के अनुरूप व्यवहार करता है। डॉ. अम्बेडकर का चिन्तन आधुनिक युग में अमानवीय अनैतिक एवं अन्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह एवं विरोध का सबसे सशक्त स्वर माना जाता है। डॉ. अम्बेडकर शिक्षाशास्त्री, वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं शोध आधारित बातें करते थे, उनकी बातों में तर्कता, तथ्यों का समावेशन, समरूपता का पुट आवश्यक होता था। डॉ. अम्बेडकर ने राइस के इस मत का खण्डन किया कि समाज में निम्न एवं घृणित पेशे या व्यवसाय में लिप्त या सम्पन्न करने वाले कालान्तर में अस्पृश्य कहलाये। डॉ. अम्बेडकर का मानना था कि अस्पृश्यता किसी